मधुबन ओम् शान्ति अंक 388 नवम्बर 2024

पत्र-पुष्प

“सफलतामूर्त बनने के लिए स्व की और सर्व की सेवा कम्बाइण्ड रूप से करो”

(याद पत्र, दादी जी – 20-10-2024)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सफलतामूर्त बनने वाले, निमित्त और निर्मान रह विश्व नव निर्माण की सेवा पर उपस्थित टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सभी प्यारे बापदादा के गुणगान करते, सदा उमंग-उत्साह में रह स्व-उन्नति और सेवाओं में तत्पर हैं ही। मीठा बाबा अव्यक्तवतन से अपने बच्चों को निमित्त बनाए अनेकानेक सेवायें कराते आगे बढ़ाते रहते हैं। अभी ग्लोबल समिट में देश विदेश की कितनी नामीग्रामी आत्मायें बाबा के घर में आई और विश्व-विद्यालय के सेवाओं की, सभी सेवाधारियों की खूब महिमा करके कुछ न कुछ ज्ञान अंजली लेकर गई। यह भी परमात्म प्रत्यक्षता का बहुत सुन्दर दृश्य हम सभी ने देखा। कैसे कदम-कदम पर बापदादा के साथ व सहयोग द्वारा हर कार्य में सफलता की अनुभूति होती है। अभी तो बापदादा के अव्यक्ति मिलन की रिमझिम शुरू हो गई है। देश विदेश के हजारों बाबा के बच्चे अपने टर्न अनुसार मधुबन में आते रहेंगे।

मीठे बाबा ने हम सबको सफलतामूर्त बनने के लिए त्यागी-तपस्वी बनाया है। हमारी तपस्या है ही एक बाप दूसरा न कोई और त्याग है हर परिस्थिति में स्वयं को मोल्ड कर श्रेष्ठ स्थिति बना लेना। सेवा में आते कभी न्यारा बनना होता तो कभी प्यारा, इसलिए विशेष अटेन्शन देकर सेवायें बहुत प्यार से करनी हैं लेकिन प्यार में फंसकर सेवा करना ठीक नहीं। इसके लिए मीठे बाबा ने हम सबको चेकिंग की एक कसौटी दी है कि जो भी कार्य करो, पहले देखो कि यह कार्य बाबा ने किया? अगर बाबा ने नहीं किया तो मुझे भी नहीं करना है। कोई भी कार्य करते डबल लाइट फरिश्ता वा ट्रस्टी होकर रहना है। कराने वाला करा रहा है, इस स्मृति से हल्का रहेंगे। कितनी भी रूकावटें आयें लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी-छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। ‘मक्खन से बाल’ समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

बोलो, सेवाओं के क्षेत्र में ऐसा ही अनुभव है ना! अभी तो एक ओर सेवाओं की स्पीड बढ़ रही है, तो दूसरी ओर अनन्य महारथी बाबा के बच्चे एडवांस पार्टी में सेवा के लिए जा रहे हैं। यह भी परमात्म प्लैनिंग है इसलिए हर दृश्य देखते नथिंगन्यु, हलचल में नहीं आना है। स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए अशरीरी बनने की तपस्या करनी है। अभी तो प्रकृति भी सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने वाली मास्टर रचयिता आत्माओं के स्वागत का इन्तजार कर रही है। तो उसके इन्तजार को समाप्त कर सदा विजयी भव के वरदानी बनना है।

अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। अभी तो सभी अपने टर्न का इन्तजार कर रहे होंगे। बाबा के बेहद घर में सदा ही बच्चों का स्वागत है। अच्छा – सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

सफलतामूर्त बनो

1) किसी भी क्षेत्र में सफलतामूर्त बनने के लिए सहनशीलता का गुण धारण करो। जैसे कोई धैर्यता वाला मनुष्य सोच समझकर कार्य करता है तो उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है। वैसे ही सहनशील जो होते हैं वह अपनी सहनशीलता की शक्ति से कठोर संस्कार वाले को भी शीतल बनाकर उन्हें भी सहयोगी बना लेते हैं।

2) संगठन में सफल होने अथवा फाइनल पेपर में पास होने के लिए सहनशक्ति चाहिये क्योंकि अन्त समय में धन व साधन होते हुए भी कोई प्राप्ति नहीं हो सकेगी। ऐसी परीक्षाओं के समय पास होने के लिए सहन शक्ति चाहिए। कैसा भी विकराल समय हो लेकिन यदि आपके पास शक्तियों का स्टॉक जमा है, तो शक्तियाँ प्रकृति को दासी बना देंगी अर्थात् सब साधन स्वत: प्राप्त होते रहेंगे।

3) सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी – यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं। निमित्त भाव नहीं तो अनेक प्रकार का मैं और मेरा-पन सेवा को ढीला कर देता है इसलिए न मैं, न मेरा। एक तरफ अति निर्मान, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जहाँ निमित्त भाव, निर्मान भाव और बेहद का भाव है, वहीं सफलता है।

4) वर्तमान समय की सेवा में सफलता का विशेष साधन है - वृत्ति से वायुमण्डल बनाना। आजकल की आत्माओं को अपनी मेहनत से आगे बढ़ना मुश्किल है इसलिए अपने वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल ऐसा पावरफुल बनाओ जो आत्मायें स्वत: आकर्षित होते आ जाएं। अभी सेवा में सकाश देकर सबकी बुद्धियों को परिवर्तन करने की सेवा करो तब सफलता आपके सामने स्वत: झुकेगी।

5) सेवा की सफलता का साधन निर्मानता है। निर्मान बन झुकना, यह कोई छोटा बनना नहीं है लेकिन सफलता के फल सम्पन्न बनना है। बुद्धि जो भी निर्णय करे वह श्रीमत के अनुकूल हो, श्रीमत के सिवाए और कोई बात बुद्धि में न आये। बुद्धि में सदा बाबा की स्मृति हो तो आटोमेटिकली जजमेन्ट सत्य और सफलता वाली होगी।

6) सेवा में रहते कहाँ न्यारा बनना होता है और कहाँ प्यारा, इसके ऊपर विशेष अटेन्शन दो। अगर प्यार से सेवा न करो तो भी ठीक नहीं और प्यार में फँसकर सेवा करो तो भी ठीक नहीं। तो प्यार से सेवा करो लेकिन न्यारी स्थिति में स्थित होकर करो तब सफलता होगी। अगर मेहनत के हिसाब से सफलता कम मिलती है तो जरूर प्यारे और न्यारे बनने के बैलेन्स में कमी है।

7) सेवाधारियों को सदा सफलता स्वरूप रहने के लिए बाप समान बनना है। एक ही शब्द याद रहे - फालो फादर। जो भी कर्म करते हो - चेक करो कि यह बाप का कार्य है। अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। यह चेकिंग की कसौटी सदा साथ रहे तो जैसे बाप सदा सफलता स्वरूप है, वैसे स्वयं भी सदा सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

8) सेवा की सफलता का आधार - त्याग और तपस्या है। एक बाप दूसरा न कोई - यह है हर समय की तपस्या और जैसा समय, जैसी समस्यायें, जैसे व्यक्ति वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहना, परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लेना अर्थात् अपने को मोल्ड कर लेना इसको कहा जाता है त्याग। इसी त्याग, तपस्या से सफलता मिलती है।

9) कोई भी कार्य करते डबल लाइट फरिश्ता वा ट्रस्टी होकर रहो तो सफलता मिलती रहेगी। साफ दिल मुराद हांसिल। कराने वाला करा रहा है, अगर मैं कर रहा हूँ तो आत्मा की शक्ति प्रमाण सेवा का फल मिलता है। बाप करा रहा है तो बाप सर्वशक्तिवान है। एक श्रेष्ठ संकल्प वा कर्म का हजार गुणा फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है।

10) सर्व ब्राह्मणों का एक संकल्प, यही कार्य की सफलता का आधार है। किसी भी कार्य में सबका सहयोग चाहिए। किले की एक ईट भी कमजोर होती है तो किले को हिला सकती है इसलिए छोटे बड़े सब इस ब्राह्मण परिवार के किले की ईट हो, तो सभी को एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सबके मन से यह आवाज निकले कि यह मेरी जिम्मेवारी है तब सफलता मिलेगी।

11) कितनी भी रूकावटें आएं लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी-छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्वशक्तिवान के बच्चे बन गए। 'मक्खन से

बाल' समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं।

12) मन्सा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़ाने वाले शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। इसके लिए स्मृति, वाणी और कर्म में श्रेष्ठता को धारण कर प्लेन बुद्धि बनो। कोई भी पुराने संस्कार का दाग न हो तब प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे फिर सफलता एरोप्लेन मुआफिक उड़ेगी।

13) जहाँ युनिटी है वहाँ सहज सफलता है लेकिन किसी को गिराने में युनिटी नहीं करना, सदा उड़ती कला में जाना है और सबको ले जाना है, यही लक्ष्य रहे। सदा आज्ञाकारी, वफादार बन हर कदम में फालो फादर करो। जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के... यही सफलता मूर्त बनने का आधार है।

14) अपने को निमित्त समझकर चलो तो सदा हल्के और सफलतामूर्त रहेंगे। कभी सेवा कम होती, कभी ज्यादा तो बोझ न लगे। क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रहा हूँ, सेवाधारी अर्थात् निर्मान बन निर्माण करने वाले। अगर निर्मान नहीं, मान की इच्छा है तो बोझ है, बोझ वाला कभी तीव्र नहीं जा सकता इसलिए सदा हल्के रह सफलतामूर्त बनो।

15) जैसे आजकल के जमाने में पैर के नीचे पहिये लगाकर दौड़ते हैं, वह कितने हल्के होते हैं। उनकी रफ्तार तेज हो जाती है। तो जब बाप चला रहा है, तो श्रीमत के पहिये लगने से स्वत: ही पुरूषार्थ की रफ्तार तेज हो जायेगी और सफलता मिलती रहेगी। सेवा में कोई भी कदम उठाते हो तो तीन बातें सदा स्मृति में रखो: 1- एकनामी (एक का ही नाम बाला हो) 2- एकमत और 3- इकॉनामी।

16) सफलता के लिए अपने पास एक रूहानी तावीज़ रखो - ''रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है''। यह रिगार्ड का रिकार्ड सफलता का अविनाशी रिकार्ड हो जायेगा। सदा मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - ''पहले आप''। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझ चलने से सफलता को पाते रहेंगे।

17) सदा हम एक हैं – यही नारा सफलता का साधन है। ''एकता और एकाग्रता'' यह किसी भी कार्य में सफलता की श्रेष्ठ भुजायें हैं। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प, निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है। जो निरव्यर्थ और निर्विकल्प स्थिति में रहते हैं उनसे ब्राह्मण सो फरिश्ता स्वरूप का साक्षात्कार होता है।

18) सफलता का सितारा तब बनेंगे जब स्व की सफलता का अभिमान न हो, वर्णन भी न करे। अपने गीत नहीं गाये, लेकिन जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्माण, निर्मल स्वभाव। दूसरे उसके गीत गायें लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गाये। ऐसी निर्मानता, निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

19) सबके मन की शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग किसी भी कार्य में सफलता दिला देता है यही शुभ भावना, शुभ कामना का किला आत्माओं को परिवर्तन कर लेता है। वायुमण्डल का किला सर्व के सहयोग से ही बनता है। ईश्वरीय स्नेह का सूत्र एक हो तो अनेकता के विचार होते हुए भी सहयोगी बनने का विचार उत्पन्न हो जाता है।

20) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है–अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

21) कम्बाइण्ड सेवा के बिना सफलता असम्भव है। ऐसा नहीं कि जाओ सेवा करने और लौटो तो कहो माया आ गई, मूड ऑफ हो गया, डिस्टर्ब हो गये इसलिए अन्डरलाइन करो - सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है स्व और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा। ध्यान रहे कोई भी सेवा हमारी स्थिति को डगमग न कर दे।

22) जिसके साथ स्वयं सर्वशक्तिमान् बाप कम्बाइण्ड है, सर्व शक्तियां स्वत: उनके साथ होंगी। जहाँ सर्व शक्तियां हैं वहाँ सफलता न हो, यह असम्भव है। कोई अच्छा साथी लौकिक में भी मिल जाता है तो उसको छोड़ नहीं सकते। ये तो अविनाशी साथी है। कभी धोखा देने वाला साथी नहीं है। सदा ही साथ निभाने वाला साथी है। तो साथी को सदा साथ में रख सफलतामूर्त बनो।

23) आप मास्टर रचता, सम्पन्न, सम्पूर्ण बनो तो प्रकृति आपका स्वागत करे। वह सफलता की मालायें लेकर स्वागत करने के लिए इन्तजार कर रही है। इसके लिए सिर्फ यह स्मृति रहे कि विजय तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। स्वप्न में भी कभी यह संकल्प न आये कि नामालूम विजय होगी या नहीं! मास्टर नॉलेजफुल के मुख से नामालूम शब्द कभी नहीं निकलना चाहिए।

24) जब अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बन सकेंगे। अगर अपना ही हिसाब चुक्तू नहीं कर सकते तो दूसरों के कर्मबन्धन वा दूसरों के हिसाब-किताब को कैसे चुक्तू करा सकेंगे इसलिए सारे दिन में जो हुआ उसे नॉलेज की शक्ति और याद की शक्ति, विल पावर और कन्ट्रोलिंग पावर से मिटाकर अपने रजिस्टर को रोज़ साफ रखना चाहिए।

25) अपनी स्थिति की हलचल, स्पष्ट को भी अस्पष्ट बना देती है। उलझनों के कारण उज्जवल नहीं बन सकते हो इसलिए अपनी स्थिति की हलचल न हो तब स्मृति क्लीयर होगी। जितना अपने ऊपर केयर रखेंगे उतना क्लीयर होते जायेंगे और उतना ही अपने पुरुषार्थ में वा सर्विस में सफलता स्पष्ट और समीप दिखाई देगी।

26) विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफलता का साधन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप की प्रत्यक्षता है। जो बोलो वह देखें। बोलते हो कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मायाजीत हैं, रहमदिल हैं, रूहानी सेवाधारी हैं... तो जो बोलते हो वह प्रैक्टिकल स्वरूप में दिखाई दे। मधुरता की मधु सदा साथ रहे तो हर कर्म में सफलता है ही।

27) साक्षीपन की राखी सदैव बंधी हुई हो तो सर्विस की सफलता बहुत जल्दी निकलेगी। अभी जिस कर्तव्य में मास लगता है, उस कर्तव्य में एक घंटा भी नहीं लगेगा। तो जैसे औरों को प्युरिटी की राखी बांधते हो, ऐसे स्वयं को साक्षीपन की राखी बांध लो, जितना साक्षी रहेंगे उतना साक्षात्कारमूर्त और साक्षात मूर्त बनेंगे।

28) जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ ना। वैसे अब दूर बैठे आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करेगी जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है। अभी अपनी वृत्ति से शुद्ध वायुमण्डल फैलाते रहो। हर सेकेण्ड अपने पर अटेन्शन रख निर-व्यर्थ संकल्प, निर्विघ्न, आकर्षण मूर्त बनो तो कैसा भी नास्तिक तमोगुणी बदला हुआ देखने में आयेगा। लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति और बातों से क्लीयर होगी।

29) सेवा में वा स्वंय की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है – एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ, ऐसी लवलीन स्थिति में रह एक शब्द भी बोलेंगे तो वह स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देंगे। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू मंत्र का काम करेगा।

30) सेवा में सफलता का मुख्य साधन त्याग और तपस्या है। त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे–तपस्वी। ऐसे त्यागी, तपस्वी बच्चे सदा अपना समय, संकल्प, सम्बन्ध सम्पर्क सब सफल करते सफलतामूर्त बनते हैं।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

“व्यर्थ संकल्प भी असत्यता है, जिससे एनर्जी खत्म होती है, मन-वचन-कर्म की पवित्रता ही सत्यता है”

(टीचर्स भट्ठी में गुल्जार दादी जी का क्लास 29-07-08)

अभी आप सब फरिश्ते बन गये हैं ना? बाबा हम सबको फरिश्ते रूप में देखना चाहते हैं और यह भट्ठी है ही बाबा की आशायें पूर्ण करने वाली। बाबा की विशेष आशा क्या है? मेरा हरेक बच्चा फरिश्ता बने। संगमयुग की लास्ट स्टेज है ही फरिश्ता रूप। फरिश्ता ही देवता बनेगा। संकल्प द्वारा फरिश्ता बनना, यह अभ्यास बहुत जरूरी है क्योंकि कोई भी बातें आये, बातें तो आयेंगी, अन्त तक माया वार करेगी। अन्त में तो और ही, हार खाते समय वह और ही पूरी ताकत से अजमायेगी। प्रकृति भी पेपर लेगी और आत्माओं का क्लेष, दु:ख वो भी देखकर सहन कर सकें, प्रकृति की हलचल में अचल रहें। चारों ओर कुछ न कुछ होगा। ऐसी स्थिति में हमारी स्थिति अचल, अटल, निर्विघ्न चाहिए। सभी फरिश्ते बनके जा रहे हैं ना। जो वायदा किया है वो निभा रहे हैं ना। तो बाबा भी खुश है, वाह मेरे बच्चे वाह! बाप भी बच्चों के गुण गाते हैं। ऐसी स्थिति अभी बनाके जाना है।

सत्यता बाबा को सबसे अच्छी लगती है। सच्ची दिल साहेब राज़ी। तो मेरी बाबा के साथ सच्ची दिल है? जो भी कुछ है वो बाबा के आगे क्लीयर है? बाबा के लिए क्या कहते हैं? शिव ही सत्य है, सत्य ही शिव है। सत टीचर, सतगुरु कहते हैं, सच बाप कहते हैं। सच्चे बाबा को कौन से बच्चे अच्छे लगते हैं? जिनमें सत्यता की शक्ति है। कभी भी कोई बात की हेरा फेरी न हो, कई कहते हैं हम झूठ नहीं बोलते हैं लेकिन चतुर बनके हेराफेरी कर लेते हैं, रॉयल रूप में कहते हैं यह बात हुई ना तभी ऐसा हुआ। लेकिन यह कलियुग की निशानी है जो बाबा को अच्छी नहीं लगती है। जो हैं जैसे हैं बाबा के आगे स्पष्ट रहना है। अगर

कमजोरी है हमारी कोई अपवित्रता की, चाहे वाचा की चाहे कर्मणा की, कोई भी दिल में असत्यता नहीं होनी चाहिए क्योंकि बाबा को सच्चा बच्चा अच्छा लगता है। हम अपने को चेक करें कि हमारे में सत्यता की शक्ति है। सबसे पहला सत है बाबा और आत्मा। तो आत्मा सत है, आत्मा निश्चय करना माना सच्चा बनना। सच्ची आत्मा होगी तो जो भी दिल में आयेगा वो दिलाराम बाबा के आगे छिपायेंगे नहीं। अगर दिल सच्ची नहीं तो बाबा के दिल में समा नहीं सकते।

सत्यता माना स्वच्छता, कोई भी अच्छी श्रेष्ठ चीज होगी तो उसे स्वच्छ स्थान पर ही रखेंगे। हमारे दिल में भी बाबा विराजमान है तो हमारी दिल सच्ची है। नहीं तो ऐसे कहेंगे हमारे दिल में बाबा है लेकिन जब समय आयेगा तो बाबा याद नहीं आयेगा। साथ में रहेगा बाबा लेकिन कम्बाइन्ड नहीं होगा। तो चेक करो हमारे दिल में कोई बुराई तो नहीं है। बुराई को सत्यता नहीं कहेंगे। जब कोई पेपर आता है तो कम्बाइन्ड बाबा की शक्ति से पेपर में पास हो जाते हैं। बाबा ने एक बार कहा था कम्बान्ड तो हूँ लेकिन समय पर काम में नहीं लेते हैं। मानों मेरे में शक्ति नहीं है लेकिन बाबा तो शक्तिमान है। तो उस समय बाबा की याद आवे। माया भी चतुर है पहले बाबा भुला देगी, अकेला कर देगी फिर वार करेगी। क्यों याद भूल जाती है? दिल सच्ची नहीं है।

कोई भी बुराई के जो व्यर्थ विचार चलते हैं, संकल्प चलते हैं। आजकल अशुद्ध संकल्प कम आते हैं लेकिन व्यर्थ संकल्प ज्यादा आते हैं। व्यर्थ संकल्प भी असत्यता है। व्यर्थ संकल्प से एनर्जी बहुत जाती है, टाइम पर दिमाग में टचिंग नहीं आयेगी। वह क्या करूँ, क्या नहीं करूँ... यही सोचता रह जाता है। यहाँ से आप अपने मन और बुद्धि को बिल्कुल ही स्वच्छ करके यानि कोई भी बुराई नहीं, ऐसी सत्यता की मूर्त बनकरके जायें।

सत्यता में सभी गुण उनके वफादार होंगे। समझो ऐसी कोई बात हमारे सामने आती है और उस समय सहनशक्ति हमको चाहिए तो ऑर्डर करो सहनशक्ति चाहिए और सहनशक्ति आवे। तो इस बात की ट्रायल पहले से ही करना। जिस समय जो शक्ति चाहिए वो शक्ति हमारे सामने हाज़िर होनी चाहिए क्योंकि अपने को मास्टर सर्वशक्तिमान कहते हो ना!

तो चेक करो व्यर्थ संकल्प के बजाए मैं समर्थ संकल्प करना चाहूँ तो हुआ, या सोचा तो समर्थ संकल्प करने का लेकिन व्यर्थ संकल्प चल जाते हैं। तो सिद्ध है कि अपने ऊपर कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है। कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर चाहिए। वो तब होगा जब सत्यता की शक्ति होगी। साथ में ईमानदार भी हो। ईमानदार अर्थात स्वयं में पहले ईमान, बाबा में ईमान, ड्रामा में ईमान हो यानि फेथ, निश्चय हो। और जो भी बाबा ने खजाना दिया है, सर्वशक्तियाँ, गुण और सबसे बड़े में बड़ा खजाना संगमयुग का समय। संगमयुग में हम एक जन्म के भी लास्ट में भी अगर तीव पुरुषार्थ करते हैं तो लास्ट सो फास्ट, फास्ट हो फर्स्ट हो सकते हैं। आप भले पीछे आये हो लेकिन आगे जा सकते हो, क्योंकि वरदान है बाबा का। लेकिन जैसे कोई स्टूडेन्ट लास्ट में आता है तो अटेन्शन से पुरुषार्थ करता है, इमानदार है, सत्यता की शक्ति है, आज्ञाकारी है तो आप पहले वालों से भी आगे जा सकते हो। लेकिन वरदान को पूरा करने वाले थोड़ा तीव्र पुरुषार्थ करो। कभी भी अपना उमंग-उत्साह नहीं करना। बाबा को रेस करके दिखाओ। विजयी रत्नों को बाबा बाहों की माला देता है। अगर आप पुरुषार्थ ठीक करेंगी, जो कुछ कमी है उसको निकाल कर जायेंगी, अटेन्शन रखेंगी तो आपको बाबा ऐसे माला डालेगा। माला पहनेंगी? कौन पहनेगा? (सब) अरे वाह!

तो अभी यहाँ जो शिक्षा मिल रही है उसमें अटेन्शन देकर उनको प्रैक्टिकल में लाना ही है। सुना और समाया। ऐसे नहीं सुनने में तो अच्छा लगा, वहाँ जायेंगे तो सरकमस्टांस आयेंगे, ऐसे नहीं। पहले अपने आप में ही फेथ रखो। अरे मैं क्या! कल्प पहले भी मैं ही बनी थी! मैं ही तो हूँ! यह याद रखो, मैं ही क्यों! क्योंकि बाबा ने हमको पहचान करके निकाला है। दुनिया वाले बाबा को पहचान नहीं पाते हैं। बाबा ने आपको ढूंढा है ना। आपको तो पता ही नहीं था भगवान है क्या! लेकिन बाबा ने आप सबको कहाँ-कहाँ से ढूंढ निकाला है। भगवान की नज़र मेरे ऊपर पड़ी, यह नशा रखो। भगवान को हम ही पसन्द आये। यह फखुर हो, अभिमान नहीं।

तो आप जितना भी आगे बढ़ना चाहो, बढ़ सकते हो क्योंकि अभी टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है। बस अपने को मालिक समझकर कर्मेन्द्रियों को चलाओ। राजा बच्चा बनना है, राजा किसको कहा जाता है? जिसमें रूलिंग, कन्ट्रोलिंग पावर हो। मैं आत्मा मालिक हूँ ना, तो मालिक होकर कर्मेन्द्रियों को चलाना इसकी आवश्यकता है।

बाबा से जो भी खजाने मिले हैं उनको ईमानदारी से यूज़ करना है। एक बाप के सिवाए कहाँ आंख न जाये, ऐसा वफादार। जो बाबा का फरमान मिले, उसमें फरमानबरदार हो। जो अभी रोज़ की मुरली है, वो आप लोगों के लिए भी वही है और 72 वर्ष वालों के लिए भी है। जो रोज़ श्रीमत मिलती है, बस आप सवेरे से रात्रि तक मुरली की विधि प्रमाण चलो। और कुछ सोचो नहीं, यह बहुत इज़ी है। आज बाबा ने यह कहा है, मुझे यह करना है। बाबा चार ही सब्जेक्ट के लिए कहता है। बाबा डायरेक्शन देता है माना श्रीमत देता है और कोई बात न सोचकर रोज़ की मुरली आप प्रैक्टिकल में लाओ, तो आप नम्बरवन हो सकते हो। बाबा को रात्रि को खुशखबरी सुनाओ। बाबा भी रोज़ की मन दरबार की डायरी लिखता था। मन-बुद्धि-संस्कार यह

सब ऑर्डर में रहे या नहीं रहे, यह रोज़ बाबा को सुनाओ। तो आपेही अपनी दरबार लगाओ। चेक एण्ड चेन्ज, यह दो शब्द याद रखो। सिर्फ चेक नहीं करना, चेक के साथ चेंन्ज भी करना। शक्तियाँ तो मिली है ना, बाबा की। किस शक्ति की कमी है, जिस कारण मैं दिनचर्या श्रीमत अनुसार नहीं रख सकी क्योंकि पेपर तो आयेगा ना। शक्तियाँ तो बाबा ने सबको एक जैसी दी है, तो चेक करो और चेन्ज करो।

शक्ति है मेरे में या नहीं, जिस शक्ति को ऑडर करती हो वो समय पर आती है? अगर नहीं, तो शक्ति आर्डर में नहीं रही ना। तो यह चेक करो मानों कोई समय ऐसा आता है, जब आपको सहन शक्ति चाहिए। आप मालिक होकर साक्षीपन की सीट पर बैठकर आर्डर करो और चेक करो तो वो शक्ति मददगार बनी या नहीं? कई बच्चों को बिन्दु लगाने के बजाए आश्चर्य की या क्वेश्चन की मात्रा लग जाती है।

तो आर्डर में रहना, सत्यता की निशानी है, जो सत बाप है, सर्वशक्तिमान है उनके हम मास्टर सर्वशक्तिमान बनकर रहें - यह है सत्यता की शक्ति। ईमानदार अर्थात् जो भी कुछ है, बाबा के आगे स्पष्ट रखो। कोई भी घोटाला नहीं। बाबा से छिपा के रखो या बड़ों से छिपा के रखो। आज्ञाकारी बनने के लिए रोज़ की मुरली पर चलो। क्या श्रीमत है, सोचने की जरूरत ही नहीं, मुरली ध्यान से पढ़ो और सुनो और वही करो। मुरली मुआफिक चलें तो आपको खुशी होगी, बाबा राज़ी हो गया, उसकी निशानी है दिल की खुशी होगी। दिल की खुशी ऐसी आयेगी जो आप रिफ्रेश हो जायेंगे। करके देखना।

बस बाबा की श्रीमत पर चलना, ईमानदार रहना, आज्ञाकारी रहना। सत्यता की शक्ति अर्थात् जो भी हो बाबा को बता दो बस। इसमें बाबा के कमरे में भी जाने की जरूरत नहीं है, अरे इमर्ज करो बाबा को, सामने हाज़िर हो जायेगा। इसमें फिर दी हुई चीज़ वापस यूज़ नहीं करना, इससे फिर आप कई बातों से छूट जायेंगे।

खुशी कभी नहीं गंवाना, खुशी गंवाने के रास्ते कौन से हैं? खुशी दो कारणों से जाती है - एक तो मेरी इच्छा होती है यह होना चाहिए। इच्छा पूरी नहीं होती तो खुशी चली जाती है, दूसरी चीज़ यह होती है कि मैं आराम से अपने सेन्टर पर बैठी हूँ लेकिन कोई ऐसा आता है जो आकर मेरी निन्दा करता है, ग्लानि करता है। हैं नहीं लेकिन झूठी-मूठी ग्लानि करता है, आप अपनी खुशी उसको दे देती हो। आपने ग्लानि सुनी, आपके मन में घृणा आई और अपनी खुशी दे दी। गलती क्या करते हैं, पता है, हम जो हो चुका है, पास्ट को ही चिन्तन में लाते रहते हैं। चिन्ता में एक है क्यूं, क्या, कब, कैसे, कौन! इन पांचों शब्द को ही सोचते रहते हो। तो खुशी हम अपने आप दे देते हैं और परेशानी ले लेते हैं। गलती यह जो पास्ट ही सोचते रहते हैं। फ्यूचर हमारे हाथ में है, बीती हुई घड़ियाँ हमारे हाथ में नहीं हैं। बीती को सोचना माना पानी को बिलोरना, उससे हाथों का दर्द ही मिलता है। तो बीती का चिन्तन नहीं करो। बाबा कहता था कि तुम्हारा चेहरा खिले हुए गुलाब जैसा होना चाहिए। चिन्ता होगी तो चेहरा खिला हुआ नहीं होगा। कितने स्वमान बाबा ने दिये हैं, तो अपने स्वमान में रहना। स्वमान में, नशे में खिले हुए गुलाब रहो। कोई तुमको देखे तो कहे अरे! यह कौन हैं, यह तो कोई न्यारी लगती है। प्रभु की प्यारी है इसलिए न्यारी लगती है। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"वैजयन्ती माला में आने वाला सच्चा पुरुषार्थी, ईश्वरीय स्नेह की डोर में बंधा होगा" (02-09-06)

भक्ति में कहते हैं मरूं तो भगवान की याद में मरूँ। हमें तो भगवान ने अपनी याद दिला के मार दिया, मर गये हैं ना। यह दुनिया जैसे हमारी है ही नहीं। दुनिया में सब कहते हैं यह मेरा है, यह मेरा है। अन्त में सब खत्म हो जाता है, कोई नहीं कहेगा मेरा है। जब मेरा खत्म हो गया तो मैं कहाँ गयी! मै मर गयी माना मेरा खत्म हो गया। यह लाइफ इतनी अच्छी और ऊंची है, फिर कोई नहीं कह सकता तुम मेरी हो। कोई अपना दांव नहीं लगा सकता है। अगर मेरापन आ गया तो कोई भी अपना दांव लगा सकता है।

शिव के साथ शक्ति का गायन है। सिर्फ शिव-शिव नहीं कहते हैं। शिव की शक्ति, शक्ति खींच लेती है। जो नये-नये आते हैं उनके लिए माया अलग होती है, आगे बढ़ते हैं तो माया अलग होती है फिर मेरे आगे माया अलग है। माया को समझने वाला, पहले लेशन से ही समझ जाता है कि यह माया है। आज फिर बाबा ने कहा आलस्य माया है। बाबा कहेगा जागो बच्चे, वो कहेगी सो जा। आलस्य माया का रूप धारण करके, मीठी बातें

सुना के रेग्यूलर, पंचुअल बनने नहीं देगा। पंचुअल, रेग्यूलर और गुणवान को मार्क्स अच्छी मिल जाती हैं। वह स्कूल का नाम बाला करते हैं। गुणवान बनना माना चरित्रवान बनना। फिर माया देखती है, यह तो मेरी बात सुनते नहीं हैं। मुझे अपने चरित्र पर ध्यान रखना है, ऊंचे ते ऊंचा मेरा बाबा है, ऐसा चरित्र मेरा भी हो। भले वो विचित्र है पर मेरा चरित्र ऊंचा बनाता है।

समझदार, सच्चा सयाना बच्चा कभी एक सेकण्ड भी मनमत या परमत पर चलकर बेसमझी का काम नहीं करेगा। मनमत बेसमझ बना देती है, श्रीमत सेकण्ड में समझदार बना देती है। मुरली हर रोज़ हमारे प्रश्नों का जवाब देती है इसलिए कभी नहीं कहेंगे यह मुरली मैंने पहले सुनी या पढ़ी है। कल की मुरली में कल की बात मिली, आज की मुरली में आज की बात मिली। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, पुरुषोत्तम बनने के लिए, पर कईयों को इसकी वैल्यू नहीं है। पुरुषोत्तम माना इस ब्राह्मण परिवार में उत्तम। दुनिया के करोड़ों में से तो हम निकल आये, भगवान ने चुन-चुन के हरेक को कहाँ-कहाँ से लाया है। कैसे हरेक को अपना बना के मेरे-मेरे से छुड़ाया है। बाबा हमको सीढ़ी चढ़ने के बजाए गिफ्ट में लिफ्ट देता है। बच्ची बैठो और जाओ। सांस चढ़ने की बात ही नहीं है, सोचने की बात ही नहीं है। ऐसा जो रिहर्सल नहीं करता है, तो माया देखती है इसके पास टाइम बहुत है, मेरा बनने के लिए। फिर वो हमारा टाइम ले लेती है, संकल्प ले लेती है। परन्तु बाबा ने जो भी नियम बनाके दिये हैं, सुबह से रात्रि तक जो उन नियमों पर चलता है उसके पास बल बहुत है इसलिए कहा जाता है नियम में बल है। जो सच्चा सयाना बाबा का बच्चा है, वो चेक करता है, कुछ भी छिपाता नहीं है। कोई कुछ उल्टा करे फिर बाप से छुपाये तो वो पाप वृद्धि करता रहता है। सेवा में उमंग-उल्लास खत्म हो जाता है।

संगमयुग में टाइम बड़ा वैल्यूबुल है। तो पुरुषार्थ करने की आदत डालनी चाहिए। बाबा ने एक बारी कहा था पहले 5 मिनट याद में बैठो, फिर 10 मिनट बैठो, मजा आने लगेगा फिर एक घन्टा बैठने की आदत पड़ जायेगी। अगर कोई कहते याद में बैठने का टाइम नहीं है तो यह भी पाप है। किसको ठगते हैं? बाबा ने कहा हुआ है टीचर को यह नहीं कह सकते ब्लिस करो, पढ़ना तेरा काम है। पढ़ाना मेरा काम है। पढ़ने वाले को आटोमेटिक उमंग आता है, फिर औरों को भी वह सुनाने लगता है। जब तक आपस में ज्ञान की लेन-देन न करो तब तक आपस में भी वह प्यार नहीं रहता। हमारा केवल काम का (सेवा का) ही सम्बन्ध नहीं है। जैसे आफिस में गये काम किया, वापस आ गये, ड्यूटी पूरी हो गयी। ईश्वरीय परिवार के प्यार के सम्बन्ध की डोर बड़ी मजबूत हो। कोई अपने को माला का दाना कितना भी अच्छा समझे, देखने में भी अच्छा हो, लेकिन स्नेह सूत्र में अगर एक दो के समीप नहीं आया तो माला में कैसे आयेगा। अगर ईश्वरीय स्नेह के सूत्र में एक दो के नजदीक नहीं आया तो कहता रहे मेरा बड़ा अच्छा योग है, मेरी अच्छी सेवा है, वह तो अपने को खुश करता है। परन्तु सच्चा पुरुषार्थी, वैजयन्ती माला में आने वाला ईश्वरीय स्नेह की डोर में बंधा होगा। तो इतना अच्छा दाना बनो जो और भी आपके साथ में रहकर अच्छे बन जायें। ऐसे नहीं अभिमान हो मैं अच्छा हूँ।

निश्चय में विजय है। जो सच्ची भावना से कुछ भी करता है उसे उसी घड़ी उसका बल और फल मिलता है। जो सच्ची भावना से सेवा करता है, जो सेवायें करके दुआयें लेता है, ऐसे सच्चे सेवाधारी के पास माया आ नहीं सकती।

किसी का दु:ख दूर करके दुआयें ले लो। तो हर एक अपने को देखे कि मुझे दुआयें मिल रही हैं। बाबा उन दुआओं में अपनी शक्ति भर देता है। अगर माया को समझना हो, मायाजीत बनना हो तो अपने सूक्ष्म संस्कारों पर ध्यान दो। जो आत्मा में मन बुद्धि संस्कार हैं। मन बुद्धि में जो श्रेष्ठ विचार हैं, श्रेष्ठ कर्म करने की जो शक्ति है, वो संस्कार अच्छे बना देती है। संस्कार अनुसार नेचर है। देह अभिमान के कारण जो नेचर बन गयी है, उठने की, बोलने की, खाने की .. उस नेचर को बाबा ने चेंज किया है। संस्कार अनुसार स्वभाव है। अभी हमारा संस्कार ईश्वरीय सन्तान का बन गया। मायाजीत बनने के लिए सी फादर, फॉलो फादर... इससे बहुत मदद मिलती है। संकल्प में दृढ़ता हो, जो कर्म बाबा ने किया है, जो बाबा को अच्छा लगता है, जो कर्म बाबा ने सिखलाया है वही कर्म मुझे करना है। देखना है तो बाबा के चेहरे को देखो, बाबा कभी मूंझता नहीं है, कभी मुरझाता नहीं है। आदि से यज्ञ में कितने विघ्न पड़े हैं, लेकिन बाबा हमेशा शान्त रहता था। मुझे बाबा समान आवाज से परे रहने की, अन्दर से शान्त रहने की शक्ति धारण करनी है, यह शक्ति ही बुद्धि को ठीक करती है। शान्ति से विघ्न समाप्त हो जाते हैं, जो विघ्न डालने वाले हैं वो अपने आप किनारा कर लेते हैं। आवाज में आये तो विघ्न पड़ेगा। विघ्नों को खत्म करने के लिए शान्ति का, योग का बल चाहिए। हमारी स्थिति को ऊंचा बनने में अनेक तरह के विघ्न आते हैं। उसके लिए योगबल चाहिए। जहाँ सेवा अर्थ निमित्त हैं वहाँ विघ्न आते हैं, वहाँ और योगबल चाहिए।

कभी चिन्ता या व्यर्थ चिन्तन में भाग्य को गँवाओ मत। भाग्य विधाता, वरदाता को अपना साथी बनाके रखो। मेरा भाग्य कोई छीन नहीं सकता। भाग्यविधाता मेरा बाप है, भाग्य मेरे बाप के हाथों में है, तो मुझे फिकर करने की क्या जरूरत है। कर्म श्रेष्ठ हैं, भाग्यविधाता, वरदाता साथ है तो फिकर की कोई बात नहीं है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें
"मर्यादा सम्पन्न जीवन बनाने के लिए अनमोल सूत्र" (1998)

1) हमारे संगठन का सूत्र है एकमत। एक मत का आधार है फेथ। जब आपस में एक दो में फेथ रखते हैं तो सहयोग अवश्य मिलता है। आपका कार्य सो मेरा कार्य। फेथ के पीछे मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। फेथ रहे तो कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई। इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दे, कहना न पड़े यह भी मर्यादा है।

2) हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी जरूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो बाबा। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

3) लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता उसे प्राण देकर करनी है, यह हमारा लक्ष्य हो। फेथ को तोड़ने वाला कांटा है रीस। तो मुझे आत्माओं से रीस नहीं करनी है रीस करो तो बाबा से क्योंकि हमें बाप समान बनना है।

4) ईष्या करना मंथरा का काम है। यह वायदा करो कि मैं मंथरा नहीं बनूँगी। ईर्ष्या अथवा विरोध भावना दूसरे की निंदा करायेगा। ईर्ष्या करना यह रावण की मत है। बाप की नहीं।

5) हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

6) अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सब कुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

7) मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए... नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

8) दूसरों को सन्तुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है। इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फसेंगे नहीं।

9) हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेन्ट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्घंन होता है इसलिए साकार बाबा ने हमेशा हमें स्नेह दिया लेकिन स्वार्थ का स्नेह नहीं दिया। तो जैसे हमारा बाबा नि:स्वार्थी था वैसे नि:स्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

10) ऐसा कभी नहीं सोचना है कि मेरा कोई सहारा नहीं है। लेकिन विघ्नों से घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर बीज को काटो। जड़ क्या है उसको समझो।

11) माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।

12) जिद्द का स्वभाव ही ज्ञान में बहुत विघ्न डालता है। जिद्द वाले अपना और दूसरों का नुकसान करते हैं। जहाँ जी हाँ का स्वभाव है वहाँ सब फूल बरसाते, दुआयें देते, जहाँ जिद्द है वहाँ पानी के मटके भी सूख जाते हैं।

13) हम निमित्त बनने वाले बच्चों का कभी मूड आफ नहीं होना चाहिए। अगर मूड आफ करके किसी को मुरली सुनाते, गद्दी पर बैठते तो बहुत बड़ा पाप चढ़ता है।

14) अपने बड़े से कभी भी न उम्मींद नहीं बनना है। सदा स्वमान में रहना है। ऐसे कभी नहीं सोचो यह तो मेरे पुराने संस्कार हैं। यह सोचना भी उसकी पालना करना है। पुराना संस्कार झूठा भोजन है। फिर क्या उस झूठे भोजन का भोग बाबा के सामने रखेंगे। मेरा तो दिव्य संस्कार हो, ईश्वरीय संस्कार हो। बहुत समय से पाले हुए संस्कार हैं उन सब संस्कारों को जीरो देने का दृढ़ संकल्प करो। रियलाइज कर उन्हें खत्म करो। व्यर्थ संकल्प तभी खत्म होंगे जब व्यर्थ संस्कार खत्म होंगे। हमनें नई गोद ली, हमारा नया जन्म है। हम ब्रह्माकुमार हैं तो यह परिवर्तन करो।

15) कोई भी किसी में पुरानी आदत हो, प्लीज उसे समाप्त करो। बाबा की लगन, बाबा की मस्ती उसी धुन में रहो। अपने को दुआओं के आधार पर चलाओ। बाबा की दुआयें लेते चलो। मुझे हर आत्मा से दुआ जरूर मिलनी चाहिए। दुआयें हमारा प्यार हैं, प्यार ही हमारी दुआयें हैं। जहाँ सर्व का मेरे से, मेरा सर्व से प्यार है वहाँ मेरे बाबा की दुआयें हैं। इससे ही मुझ आत्मा की उन्नति है। यह हमारा अन्तिम जन्म, अन्तिम घड़ी है, किसकी हमारे ऊपर दुआ नहीं है तो उससे किसी भी तरह दुआयें जरूर लेना है।

16) हम बच्चे जो बाबा के पास स्वाहा हुए हैं उनमें अनुमान, मूड आफ, परचिन्तन, ईर्ष्या, द्वेष आदि की रस्सियाँ नहीं होनी चाहिए। इन रस्सियों को भी इस यज्ञ में स्वाहा करो। यही सच्चा मंगल मिलन है।

17) जहाँ नियम है वहाँ संयम है। जहाँ कायदा है वहाँ फायदा है। ईश्वरीय मर्यादा ही हमारा स्वधर्म है। सबसे प्रेम करो लेकिन प्यार मत दो, बाबा से सम्बन्ध जुटाओ स्वयं से नहीं। हल्का व्यवहार मत करो। गम्भीर रहो। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नियम है, दूर बाज, खुश बाज रहो.. हंसी से बात न करो। काम से काम बस... ओम् शान्ति।